

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४ वेदवेद (४१९)

ग्रंथ नाम विक सिंधु

विषय मन्वेदोत

मराठी

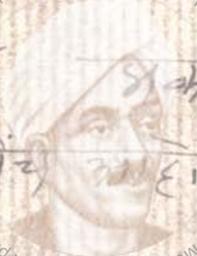
वेदांत

४३४ वे: १११

विवेकसिंधू

१५३

या पोथीत



मकरा साकारा घट्टा

इतकीच काही स्थळ, लेखन काळ

लेखकाच्या उद्देशा मुळीच नाही

[Signature]

Project for the Digitization of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(1)
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीदत्तात्रेयाय नमः ॥ तव सखि
 स्वानुभूति चि ॥ त्वयि पितृनीजा चित्तिया प्रबोधि
 छाडेका चि ॥ तोये गिराज ॥ १ ॥ इनाले नैत्राचे उन्मी
 कण ॥ तव रुठिले अलः करण ॥ परि अनुभवाचे अव
 तरण ॥ नवचे चिकि ॥ २ ॥ इद्रियकी सुचे इति ॥ परि
 लया चि धावमे इति ॥ पुनरपी चुबकळली ॥ ति
 येना नंद जति ॥ ३ ॥ जैसे भागले ठेरा पावे सुखा
 डिकवि डार ॥ तथु नउ ठवि ला थोर ॥ आंग चि द्या लि ॥

(2)
तैसी तापत्र इतापलि । इन्द्रिये बह्मनं दिनीवाली ।
तिये स्वविष इ प्रवर्तलि । न प्रचर्ति चि ॥ ५ ॥ मगहि
व्यावळि वेळ ॥ ७ ॥ उनि इन्द्रियाने बळ ॥ श्रीगुरुते वा
चा सरळ ॥ विन वित्तसे ॥ ८ ॥ उठिळा आनंद भरे
सु ॥ गुरुसि प्रदक्षणे करितु ॥ श्रीगुरुचरणी असे
लागतु ॥ वेळो वेळ ॥ ९ ॥ मन प्रेमभाव भरेले ॥
देनि करस पुंठ जे उले ॥ मग काहिये कबोले आरभिले ॥
शिष्या शिरो मणि ॥ १० ॥ जम जय अनाथ बंधु ॥ जय ज

(2A)

यज्ञिकरुणासिधुं ॥ तुजिमहापरमसिद्ध ॥ राजयोगी
॥ थाजेआनादिहारपले ॥ मिमजचिचौरले ॥ लया
मातेमजभेठविले ॥ श्रीगुरुराया ॥ १० ॥ तुझेयाक्ष
पाद्वि ॥ जालिपरवस्तुसिद्धि ॥ उपमानाहिये
सृष्टि ॥ तयामहासुखासि ॥ ११ ॥ यातुझेयाउपका
रा ॥ गुतिर्णनहिजेदातारा ॥ जरीअपिजलिसंभ
मृधिसंभार ॥ नानावस्तुचे ॥ १२ ॥ ब्रह्मकाळत्रयि
अबाधित ॥ नानावस्तुतियानाहावंत ॥ तिणेका

(3)

चिये

2

ये होइ जे उतिर्णत्व ॥ ऐसे के विद्ये उ ॥ १७३ ॥ ऐके दिध
ठा कल्प लस ॥ तया सिद्धि जे दर्पणि चारु ॥ लेणे
काय लो ग वंसा ॥ उतिर्ण होये ॥ १७४ ॥ पाहो चिंताम
णिसाठि ॥ देइ जे फुठ कि का च बठि ॥ तया सिद्धि
र्णपणा चि गोठि ॥ कये कसू ये इ ल ॥ १७५ ॥ अहल
चे कावरे ॥ जया सिद्धि चि उतरे ॥ तया सद्गुरु
सिद्धि च लुरे ॥ के वि होइ जे ॥ १७६ ॥ पशु सिद्धि
कासन ॥ रं कासिरायपणा ॥ ऐसे जिया सिद्धि वप

2

॥विवेक०

॥आध्या॥५॥

॥सिधु॥

(3A)

सि

ण॥प्रसादे जयान्वे नि॥१७॥ ह्युणे नितनुमणध
न॥गुरुसि करवे सर्पय॥ लरि होइ जे गु तिणी॥ का
हि ये क॥१८॥ आहो भक्ती न रावे गुरुराया॥ हे ने णो
निज्ञो प्राणिया॥ गुरु न भजे तो रिणिया नाथे उ
द्योग ति॥१९॥ हे नाठी वं ल उपचार॥ गुरु सि वं चि
त्ति जे न रा ले पा हुणे हो लि अ वि चार॥ निरया चे दे
खा॥२०॥ आता उ स हो मा सि अ वि द्या॥ लुवा हे
का चि फे डि लि स द्या॥ जि भ व रोग वै द्या॥ श्रीगु

(4)

रस्यामि ॥२१॥ भवरोगे वेदलो ॥ देहप्रमाणे मिरा
उलो ॥ तुवाभल उपचारिलो ॥ निवि या परि ॥२२॥
अर्धमात्रा ब्रह्मरसे ॥ मति उपचारिले कैसे ॥ ह
ब्रह्मगोळ कोदल लसे ॥ माझे निपुष्टपणे ॥२३॥
कवणायेकाचे यामरण ॥ आउद्यालितिसद्युज
नालियाच्या उपकारुनीर्ण ॥ निविजेपै ॥२४॥
जन्ममरण चिया कोडि ॥ तुकलिनियाचिया
प्रीडि ॥ तयागुरुदास्याचिगोडि ॥ अनुपम्यजे ॥२५॥

३

३

६५

(५A)

गुरुस्येचे फळलेपण ॥ हे चित्तेथिची जाणावी खुणा ॥
जे नित्य नवे प्रेमळपेणा ॥ गुरुदास्य विषड ॥ २५ ॥ मिं
त्रयंत्र उपदेशिते ॥ द्यतेथि गुरुजाईते ॥ परिसंसा
रमहादुखाते ॥ फेडुन हाकति २० ॥ ह्यणे निदुर्लभ
तोसद्गुरु ॥ जे करि ब्रह्मेसि साक्षात्कारा ज्याचे
निहेळी मात्रे संसार ॥ निरसो निजाया ॥ २५ ॥ आत्मा
कैचल्याचा दानि ॥ लुचिमेकुत्रिभुवनि ॥ संसार
दैन्यजेयाचे नि ॥ दिडाथि उहोया ॥ २५ ॥ संसारभ

(5)

यविसरलो ॥ मिमाहासुरे निवाळो ॥ लुमचा अ
नुहग्नहोला धलो ॥ ह्यणुनिजी ॥ ३० ॥ आतारा
के असे करावे ॥ लेखरवमागुते मज्यावे ॥ लेचि
ठेणुनि असावे ॥ मियानंतर ॥ ३१ ॥ लेचिखरवकि
मात्मक ॥ ऐसे जाणावे न्यासात्मक ॥ त्तरिजिद्रपा
पूर्वक ॥ मजानिरुपावे ॥ ३२ ॥ ऐसि प्रार्थना अर्कानु ॥
गुस्तेचिकामधेनु ॥ दुभेवसेरे दठेनु ॥ सिखवत्पासि
॥ ३३ ॥ मगकायबोलिलालो योगिंदु ॥ बारतुपुणचेंद्रु ॥

४

४

(तुवामाज्ञाबोधसमुद्भु) उल्लासविला ॥ ३४ ॥ तुसे
 यागुणगणनेसि ॥ उपमानाहिकवणासि ॥ तारिवो
 लिजैलतेनिजमानसिद्धधरावे ॥ ३५ ॥ तुजमाहासु
 खलाधले ॥ जेतुगुसदास्यफळले ॥ जेपरब्रह्म
 नुभवले ॥ स्यानुभवपै ॥ ३६ ॥ जेधमनासिनहिसे
 रसु ॥ वाचेसिनहिप्रवेशु ॥ तेभिठलास्वयंप्रकासु ॥
 तुजब्रह्मानंदु ॥ ३७ ॥ जेसुठकनारेड ॥ जेगुणेनावा
 ठातिमहास्वरवगेड ॥ ब्रह्मस्यरूप ॥ ३८ ॥ जेपरब्रह्म

(6)

अखंड। बोलतद्वैवे। सिकोनाडा। तेअनुभविता
होयकागडा। विप्रयसुखा। थजेथनिद्रानाजाग
णे। जेथकरणेनाभोगणे। तेथसुखासिहिचारवणे।
आपणपाचि। ४०। जेथमितेहकउसणी। ज्जियना
हिकाकीकवणी। तियेपरमनिर्वाणी। लुलिनजा
लासि। ४१। कल्पनेचेंवभाळाजेथविरालेयेकि
हेका। तेचिदाकाशनिर्मळ। तुजप्रकाशले। ४२।
हेमाहावक्यचेरहस्याजेजेवेधराचेसमरस्या।

(6A)

जेणुपजेवैरस्य। संसारसुरवाचि॥४३॥ हा हि वडो
कोचा समयोग॥ हाचि बोलिजे राजयोग॥ जेणे फी
ठे भवरेणु॥ हेता मात्रे॥४४॥ हे निर्विकल्प समाधि॥
जे भवरेणिया दिव्ये षधि॥ जेणे फिठे जा दिव्याधि॥ धि
विषय सुरवाचि॥४५॥ हा लुज जल भय ल भुजे उल॥
जे का परमात्मा भेठ ल॥ दिणय क सु क क जाल॥
महासुरवाचा॥४६॥ हे सि हे ब्रह्म स्थिति॥ येथ विष
इहो वा विमज दठ मति॥ हे सी जरि नु सि चित्त वृत्ति॥

(३)

तरिभवधारिजोगा ॥ ४७ ॥ येथ विषयि बसे गुपावो ॥
जेणे होय स्वरूपि सुखावो ॥ तोचि धारिये रसाडि वा
वो ॥ मिथ्या श्रमु ॥ ४८ ॥ होय विविषयि विरकी ॥ चि
तासि प्रत्यगावति ॥ कराविड श्रिभक्ती ॥ बनन्यभा
वो ॥ ४९ ॥ जे गुरुच्य बनु ग्रह तु ॥ तेणे सेवा वा येकां
तु ॥ तेथे चि ता वा गुणा तितु ॥ परम पुरुष तो ॥ ५० ॥ जे
कळे जेवति उठी ॥ ते देखि जेवग कळि पद वि ॥ तरि
कल्पना हि पुठि ॥ होउ निमरे ॥ ५१ ॥ मना सरि सधाव

श्री

६

६

॥ चिवेक ॥

॥ आध्या ॥ ५ ॥

॥ सिधु ॥

(३५)

ता ॥ ननु ठे संसार चिंता ॥ तिणे सिव गळे होला ॥ असे
महास्तरवा ॥ ५५ ॥ ह्यणे निजे जो संकल्प उठी ॥ नवचा
वेतया चिय पाठि ॥ विका विमा गुति दृष्टि ॥ निराळं वि
॥ ५७ ॥ जे जो विषय आठवेल ॥ तो तो मिथ्येले विदारि
जैल ॥ तरि चिंता सिउप जैल ॥ सहज तेथ विषयि ॥ ५८ ॥
मियेणे आकारे ॥ जिव स्वरूप सुकुति स्फुरो ॥ लेविचा
रिता तल निधरि ॥ उठति निराळं वि ॥ ५९ ॥ ले निराळं
बनिरजन ॥ जिवचे जन्म स्थान ॥ ह्यणे निहा आठवेल

(8)

दे

ब्रह्मतेथचिपै ॥ पथा अपुले ये जन्म भूमिके ॥ वस्ती
बहुते पुण्ये राके ॥ तिथ निमिजे तरि चुके ॥ अधोग
ति ॥ ५७ ॥ इह चिये जन्म भूमिके चे ॥ यकडे महिमा
नसाचे ॥ तरि जन्म स्थान जीविते ॥ आगाध महिमा कि
॥ ५८ ॥ अपुलिय उगमाले ॥ साउनथावणे सरिते ॥ त्मण
गुनिसदा पातलिते ॥ अधः पांतु ॥ पथा नदि उगमिची
स्थीरावति ॥ तरिते चिसमुद्र होति ॥ अहो आधारका
नकृति ॥ आणिकां नदिसि ॥ द्वा रेसा अपुला उगु ॥

७

७

(8A.)

येता

येकि

जरिनसंडिताहाजिउ। लरिआंगसिथोरु।। परब्र
लीचा॥६॥ अणुनिकल्पनेसिमासु। करवाइ
द्रियासिसहासु। लरिडिवासिब्रंहेसिनारु। कैचा
उरेल॥६॥ अनुभवार्चिबुण॥ जेप्रपंचासिहोयसं
हारण॥ लेघीचैसायेनविवरण॥ तिअईकपात्तु॥६॥
स्वरूपोन्मुखस्फुरणा॥ हेचिमायेचेलक्षण॥॥ आवि
व्यल्लेजाण॥ विपरिलकल्पना॥६॥ मनचक्षुरा
दिके॥ इद्रियेअनेके॥ तियस्करवदुःखदायके॥

(१)

चा विद्याजनिते। ६५। अणो न कल्पने ग्रासि। न श्रु
माया अविवेसि। तेथ सकास इद्रियासि। होय न
पेसाचि। ६६। पाणी योरच द्वारि। चरित दाढि जै
लजरि। येर मो क कपिरि। धरा विन लगति। ६७
आहो कल्पना विराढि। तेथ सं कृति निमाढि
येथ जाक्षेपे स्फुरति। मज युक्ती यकि। ६८। सु
बुद्धि अवस्थे कल्पना। निःशेष होये छिन्ना। तरि जि
वाचे संसरण। कान युके चो ६९। जिया शिवक्ष

(१५)

दृशे ॥ हे काय कल्पना असे ॥ तरिका न चुकविका
 सै संश्रुतिचे ॥ ७० ॥ असे वाधे पेरु तर ॥ जिबोली
 जे लसुंदर ॥ ते लुबाई कचतुरा जिणे संदेह फिरे ॥ ७१ ॥
 जीवा सि स्रुती दृशे ॥ कल्पना किरनसे ॥ परि
 अज्ञानानिरसे ॥ ते पेरु होय संश्रुति ॥ ७२ ॥ सुषु
 ति असने जिजे ॥ निणे चि होउनि असीजे ॥ ये
 थ अत्मानु भुवो लिजे ॥ केसा कवणे परि ॥ ७३ ॥
 अलविष इ आज्ञान ॥ जव वरिने कृष्टिण ॥ हाच न

श्री चुके इत्तमरण ॥ जिवा सिपै ॥ ७४ ॥ गुरुचे निर
पाभरो जे फिठे अज्ञान शुरे ॥ मैग सचिदानंद
उरो ॥ परब्रह्म ॥ ७५ ॥ स्रुष्टिका कि कल्पना ॥ अ
ज्ञान होय लिना ॥ तेष अज्ञाने बाकी गण ॥ चल
आसुयासि ॥ ७६ ॥ जेथ अज्ञान मरो ॥ मणुनि
संसार नसरे ॥ तरि अद्ये पाचि उतरो ॥ तीये नि
राथ केचि कि ॥ ७७ ॥ जिवा सि वृक्ष ज्ञाति ॥ निरं
तर वती स्रुष्टि ॥ तेष कल्पने सि होय वस्ती ॥

(१०)

e

e



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com